

तथा कटाई में 60 प्रतिशत श्रमिक महिलायें होती हैं। ओसाई, कटाई, भूसी निकालना, सफाई एवं भण्डारण करने का सारा कार्य महिलायें ही करती हैं।

केरल में 80 प्रतिशत से अधिक महिलायें धान की बोआई, गुड़ाई, भण्डारण एवं संसाधन कार्य देखती हैं तथा 90 प्रतिशत से अधिक महिलायें अनाज के भण्डारण एवं विपणन सम्बन्धित निर्णय लेने में भाग लेती हैं। मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले की आदिवासी महिलायें खेती का 75 प्रतिशत और पशुपालन का 68 प्रतिशत कार्य करती हैं। इन अहम् भूमिकाओं के लिए अगर इन्हें देश की खेती का मेरुदण्ड एवं देश की अन्नपूर्णा से सम्बोधित किया जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

अन्न सुरक्षित परन्तु अन्नपूर्णा असुरक्षित महिलाओं की मातृत्व शक्ति एवं अथक परिश्रम से भुखमरी एवं अकाल पीड़ित और विदेशियों की शब्दावली में “बेगिंग बाउल” से सम्बोधित हमारे राष्ट्र ने आज खाद्यान्न क्षेत्र में सम्पन्नता के साथ निर्यात में भी अच्छा स्थान प्राप्त कर लिया है। आज हम फल उत्पादन में भी अग्रणी हैं परन्तु इन सब उपलब्धियों को प्राप्त कराने वाली अन्नपूर्णा की अवस्था आज करुणामयी क्यों है? इस विषय पर दृष्टिपात करें तो लैंगिक पक्षपात, भेदीय मजदूरी, सांस्थानिक सेवा सहायता से वंचित, रूढ़ीवादी रीति-रिवाज एवं शिक्षण और प्रशिक्षण का अभाव जैसे मुद्दे उभर कर सामने आते हैं।

आधुनिकीकरण एवं यन्त्रीकरण ने कृषि क्षेत्र में लैंगिक पक्षपात को उभारा। कृषि संचालन का ध्रुवीकरण पुरुषों के पक्ष में होता चला गया। महिलाओं का नियन्त्रण कम होता गया। यद्यपि कृषि कार्यों का बोझ उन पर बढ़ता गया। स्त्रियों से उनका भूमि उपयोग का अधिकार चला गया। महिला कृषक की संख्या में भारी कमी आयी अपितु महिला श्रमिकों की संख्या तेजी से बढ़ी। आज ग्रामीण क्षेत्रों में लगी महिला श्रमिकों में से 87 प्रतिशत खेतिहर मजदूर हैं।

कृषि में औरतें पुरुष से अधिक श्रमदिन प्रदान करती हैं तथा अधिक परिश्रम करती हैं फिर उन्हें पुरुषों की अपेक्षा 1/3 से आधी तक कम मजदूरी दी जाती है। वैकेंट रमानी (1986) लिखती हैं “तमिलनाडु में जहां पुरुषों को 13.00 रुपया प्रतिदिन दिया जाता था” वहीं महिलाओं को सिर्फ 6.00 रुपया दिया जाता था। लैंगिक पक्षपात का बुरा प्रभाव भावी अन्नपूर्णा पर भी पड़ा। प्रतिष्ठा पद पर अन्नपूर्णा की पुनर्स्थापना अन्नपूर्णा की समस्याओं पर समन्वित ढंग पर विचार करना एवं उनके उत्थान के लिए कदम बढ़ाना कृषि के भविष्य के लिए अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि इनकी अभिन्न क्षमता, मानसिक परिपक्वता और दूरदर्शिता के बल पर ही मानव जीवन की उत्तरजीविता आश्रित रही है। आज की पुरुष प्रधान व्यवस्था में कृषि संस्कृति ने प्राकृतिक साधनों के शोषण का रूप ले लिया है जिसके फलस्वरूप पैदावार में अवनति, पेयजल एवं सिंचाई की समस्या, जलमग्नता, मृदा में लवणता एवं पोषक तत्वों की बाहुल्यता एवं पुनरुत्थान आदि जैसे दुष्परिणाम उभर रहे हैं। जब विश्व “फुकोवका” की प्राकृतिक खेती के सिद्धान्तों से प्रभावित होकर उन्हें अपना रही है, तो क्यों न हम अपनी कृषि पद्धति की धरोहर को पुनः प्रचलित करें जिसकी नींव महिलाओं ने कई शताब्दी पूर्व रखी थी और जिस पद्धति को देख कर अचम्बित हुए “जॉन ए वायलंकर” ने

कहा था कि उन्होंने ऐसे आदर्श और परिपूर्ण खेती की छवि और कहीं नहीं देखी।

पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने कहा था कि महिलाओं की प्रगति से समाज प्रगति करता है और इससे देश प्रगति करता है। वर्तमान में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा “बेटी बचाओ देश बचाओ” का नारा तथा कार्यक्रम ने महिलाओं के सशक्तिकरण को अधिक बढ़ावा दिया है। बहुमुखी विकास के लिए महिलाओं के उच्च शिक्षण-प्रशिक्षण, सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण तथा उद्यमता विकास पर विशेष बल देना होगा। लैंगिक पक्षपात, दहेजप्रथा, नारी शोषण, नारी शिशु हत्या जैसी कुरीतियों को समाज से समाप्त करना होगा। कृषि संचालन में उनका अधिकार लौटा कर उनके स्थान को पुनः प्रतिष्ठित करना होगा। देश की प्रगति एवं समृद्धि के लिए अन्नपूर्णा का वरदान आवश्यक है। पौराणिक धर्मग्रन्थ भी यही शिक्षा देते हैं कि “यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता”।

— अभय कुमार सिंह, आर.के.दोहरे, एन.आर. मीना,
ऋषि कुमार सिंह, अरविन्द प्रताप सिंह एवं
विकाश पाण्डेय

आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,
कुमारगंज (अयोध्या)

अगामी मई से अगस्त की कृषि गतिविधियाँ

मई: अप्रैल-मई में टमाटर के फलों को सफेद होने (सन बर्न) से बचाने के लिए सिंचाई के ठीक प्रबंध के साथ-साथ, 3-4 पंक्तियों के बीच में सनई या ढेंचालगाएँ और ऐसी किस्मों का चयन करें जिसमें अधिक पत्तियाँ होती हैं। अप्रैल-मई में बैंगन की रोपाई की जाती है और इस मौसम में 10-15 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करें। बैंगन में तना और फल भेदक एक गंभीर कीट है, इसके नियंत्रण के लिए 10 मीटर के अंतराल पर 100 फेरोमोनट्रेप प्रति हेक्टेयर लगाकर वयस्क नर को पकड़कर नष्ट कर देना चाहिए। भिन्डी इस समय पुष्पन और फली विकास अवस्था में होती है, इस समय सिंचाई 8-10 दिन के अंतराल पर की जाती है। फली-भेदक कीड़े को नियंत्रण करने के लिए 50000 अंडा परजीवी ट्राइकोग्रामा की संख्या कार्ड की मदद से खेत में छोड़ने से इस कीड़े का प्रकोप काफी कम हो जाता है।

जून: धान की रोपाई के लिए नर्सरी तैयार करना: सामान्यतः एक हेक्टेयर खेत की रोपाई हेतु 30 से 35 कि. ग्रा. धान का बीज, पौध तैयार करने हेतु पर्याप्त होता है। एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में धान की रोपाई के लिए 1/10 हेक्टेयर क्षेत्रफल में पौध तैयार करना पर्याप्त होता है। धान की नर्सरी की बुवाई का सही समय 15 मई से 20 जून तक उपयुक्त पाया गया है। नर्सरी लगाने के लिए खेत में पानी भरकर 2-3 बार जुताई करते हैं ताकि मिट्टी लेहयुक्त हो जाए तथा खरपतवार नष्ट हो जाएं। आखिरी जुताई के बाद पाटा लगाकर खेत को समतल कर सुखा लिया जाये। सतह पर पानी सूखने पर खेत को 1.0-1.5 मीटर चौड़ी तथा सुविधाजनक लंबी क्यारियों में बांट लें ताकि बुवाई, निराई और सिंचाई की विभिन्न सस्य क्रियाएं आसानी से कर सकें। क्यारियां बनाने के बाद पौधशाला में 50-55 मि.मी. पानी भर दें और बीजों को समान रूप

से क्यारियों में बिखेर दें। अगले दिन सुबह खड़ा पानी निकाल दें और एक दिन बाद ताजा पानी से सिंचाई करें। यह प्रक्रिया 6-7 दिनों तक दोहराएं। इसके बाद खेत में लगातार पानी रखें, परंतु इस बात का ध्यान रखें कि किसी भी अवस्था में पौध पानी में डूबे नहीं। खेत में भी यदि खरपतवार ज्यादा हो तो बुवाई के 3-4 दिनों के भीतर ब्यूटाक्लोर (1.5 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व प्रति हेक्टेयर) मात्रा को 50 कि.ग्रा. रेत में मिलाकर खेत में फैला देना चाहिए। 20 से 25 दिन में पौध इस तरह से रोपाई हेतु तैयार हो जाती है। अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में, विशेषकर जहाँ जल भराव होता है, वहां मक्के की बुवाई मेंटों पर करनी चाहिए। एक हेक्टेयर के लिए 20-22 कि.ग्रा. बीज को 60-70 × 20 से.मी. पर बुवाई करते हैं। बुवाई के 15-20 दिन पहले सड़ी हुई गोबर की खाद 6-8 टन/हे. की दर से प्रयोग करना चाहिए। सामान्यतः मक्का के लिए 120-150 कि.ग्रा. नत्रजन, 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस और 40 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हे. की दर से प्रयोग करना चाहिए। साथ ही 25 कि.ग्रा. जिंकसल्फेट/ हेक्टेयर भी बुवाई पूर्व प्रयोग करना चाहिए। बाजरा के लिए भली प्रकार खेत को तैयार कर वर्षा जल को मेड़बन्दी कर पूर्ण उपयोग में लाएं। दीमक के प्रकोप को रोकने के लिए 20-25 कि.ग्रा. फोरेट को प्रति हे. उपयोग करना चाहिए। बाजरा की 4-5 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होता है। इसको 50×10 से.मी. की दूरी पर लगाना चाहिए। वर्षा में देरी होने पर जून माह में 500-600 वर्ग मी में इसकी नर्सरी लगा सकते हैं और वर्षा के आगमन पर बाजरा के पौध की रोपाई कर सकते हैं। इसी प्रकार को दो, चीना, मडुआ, रागी और सांवा फसलों की बुवाई के लिए भी तैयारी इस माह में शुरू करते हैं। कोदो की 10-12 कि.ग्रा. और अन्य मोटे अनाज वाली फसलों में 8-10 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करते हैं। सोयाबीन की बुवाई के लिए 75-80 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर 45 से.मी. की पंक्ति से पंक्ति की दूरी पर बोते हैं। बीज को बोने से पहले फफूंदनाशी, 1 ग्राम वाबिस्टीन प्रति कि.ग्रा. बीज के साथ राइजोबियम के एक पैकेट से 10 किलो बीज को उपचारित कर छाया में सुखाकर बुवाई करते हैं। सोयाबीन के लिए 20-25 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60-80 कि.ग्रा. फास्फोरस तथा 40-50 कि.ग्रा. पोटाश के अतिरिक्त, 20-25 कि.ग्रा. गंधक भी आवश्यक है। खरपतवार नियंत्रण के लिए, बुवाई के तुरंत बाद 1 कि.ग्रा. पेंडीमेथालीन 700-800 लीटर पानी में घोलकर एक हेक्टेयर खेत में डालना चाहिए।

खरीफ प्याज के लिए 75-40-40-20 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर नत्रजन, फॉस्फोरस, पोटाश और सल्फर की संतुति की जाती है। कद्दूवर्गीय फसलों के लिए जून के महीने में वर्षा आने पर खीरा, ककड़ी, लौकी, तोरई, कद्दू, करेला, तरबूज, खरबूज, पेठा आदि की बुवाई की जाती है। लौकी और खीरे में 2.0-2.5 कि. ग्रा. जब कि तोरई, कद्दू, छप्पन कद्दू में 5-6 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर लगाता है।

जुलाई: धान की रोपाई के लिए एक सप्ताह पूर्व खेत की सिंचाई कर दें। रोपाई से पहले 2-3 जुलाईयाँ हैरो से करके तथा बाद में पानी भरकर खेत में पडलर एवंटिलर से जुलाई करके व पाटा

लगाकर मिट्टी को लेह युक्त एवं समतल बना दें। मध्यम व देर से पकने वाली प्रजातियों की रोपाई माह के प्रथम पखवाड़े तक पूरा कर लेना चाहिए। धान की शीघ्र पकने वाली प्रजातियों की रोपाई जुलाई के दूसरे पखवाड़े तक की जा सकती है। सुगन्धित प्रजातियों की रोपाई माह के अन्त में प्रारम्भ करें। उचित आयु की पौध रोपाई से धान की बेहतर पैदावार होती है। अधिक पैदावार के लिए 20-25 दिन की आयु में पौध का रोपण मुख्य खेत में कर दें। पौध को उखाड़ने के पहले दिन क्यारियों को अच्छी तरह सिंचाई करके पौध रोपण वाले दिन सुबह ही नर्सरी से नव पौधों को अलग कर देना चाहिए। नव पौधों को किसी मुलायम सामग्री से 5-8 से.मी. व्यास वाले सुविधा जनक बंडलों में बांध लेना चाहिए। निकालते समय ध्यान रखें की पौध की जड़ों को कम से कम नुकसान पहुँचे अन्यथा पौधों के बढ़वार व फुटाव पर कुप्रभाव पड़ता है। पंक्ति से पंक्ति की दूरी 20-30 से.मी. एवं पौधे से पौधे की दूरी 15 से.मी. होनी चाहिये। पौध की खेत में रोपाई 3 से.मी. की गहराई पर करते हैं। एक जगह पर 2 से 3 पौधे ही लगायें। देर से रोपाई करने की दशा में अथवा ऊसर भूमि में रोपाई के लिए 15×10 से.मी. की दूरी पर लगभग 35-40 दिन पुरानी पौध तथा प्रत्येक स्थान पर 3-4 पौध की रोपाई करें।

धान की बौनी जातियों के लिये 100-120 किग्रा. नत्रजन, 60 किग्रा. फास्फोरस, 40 किग्रा. पोटाश एवं 25 किग्रा. जिंकसल्फेट प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। बासमती की लम्बी किस्मों में 60 किग्रा. नत्रजन पर्याप्त होती है। सिंगल सुपरफास्फेट, म्यूरैट ऑफ पोटाश एवं जिंक की पूरी मात्रा आखिरी जुलाई के समय देनी चाहिये। पौध अच्छी तरह पकड़ लें तो यूरिया की पहली तिहाई मात्रा रोपाई के पांच दिन बाद समान रूप से छिड़क दें। यूरिया डालने के 24 घण्टे बाद ही पानी दें यदि हरी खाद या गोबर की खाद का प्रयोग किया गया हो तो नत्रजन की मात्रा 20-25 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से कम कर देनी चाहिये। अगर सिंगल सुपरफास्फेट की जगह पर डी.ए.पी. का प्रयोग कर रहे हैं तो यूरिया की मात्रा 50 किग्रा प्रतिहेक्टेयर कम कर दें। लेकिन ध्यान रहे कि जिंकसल्फेट को कभी भी फास्फोरस वाले उर्बरक के साथ न मिलाएं।

धान के खेत में रोपाई के बाद 2-3 सप्ताह तक 5-6 सेमी. खड़ा पानी बरकरार रखना चाहिये। पौध रोपण के समय, फूल आने से पहले, फल आने की अवस्था एवं दाना बनने की अवस्था में पानी की कमी होती है तो उपज में भारी कमी आ जाती है। अगेती फूलगोभी, बैंगन एवं हरी मिर्च कि रोपाई का उपयुक्त समय है। रोपाई के समय अगेती फूलगोभी में 40 कि.ग्रा. नत्रजन, 60 कि.ग्रा. फास्फोरस व 40 कि.ग्रा. पोटाश तथा बैंगन में 50 किग्रा नत्रजन, 50 किग्रा फास्फोरस व 50 किग्रा पोटाश एवं हरी मिर्च में 40 किग्रा नत्रजन, 40 किग्रा फास्फोरस 40 किग्रा पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। अगेती फूलगोभी व हरी मिर्च की रोपाई 45×30 सेमी. एवं बैंगन की रोपाई 60×60 सेमी की दूरी पर करनी चाहिए। रोपित खेतों में जल निकास की उचित व्यवस्था करें। तुरई की बरसाती फसल की रोपाई जुलाई महीने के पहले हफ्ते में 100×50 सेंटीमीटर की दूरी पर करें।

अगस्त: धान में नत्रजन की बची हुई दो तिहाई मात्रा को दो भागों

में सामान रूप में डालें। नत्रजन की पहली एक तिहाई मात्रा कल्ले फूटते समय तथा शेष एक तिहाई मात्रा पुष्पावस्था पर यूरिया खाद के रूप में प्रयोग करना चाहिए। यदि खेत में जिंक की कमी के लक्षण हों तो 0.5% जिंक सल्फेट को 0.25% बुझे हुए चुने के घोल के साथ 2-3 बार छिड़काव 15-20 दिनों के अन्तराल पर करें। धान की पत्तिल पेटक कीट की सुंडी के नियंत्रण के लिए इन्डोसल्फान (35 ई. सी.) दवा की एक लीटर मात्रा 500-600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें। तना छेदक के नियंत्रण के लिए डाईमेकनफास्फामिडान (85 ई. सी.) 590 मि.ली./है. या मोनोक्रोटोफास (36 ई. सी.) 1.5 ली./है. या क्लोरोपारीफास (20 ई. सी.) 2.5 ली./है. 500-700 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें। मक्के में नरमंजरी निकलते समय नत्रजन की सप्लाई के लिए 70-80 कि. यूरिया खाद/ हैक्टर की दर से प्रयोग करें। मक्का में पत्तिलपेट कीट की रोकथाम के लिए क्लोरोपारीफास 1 मि.ली./लीटर पानी में मिलाकर या इमानेक्टिनबेंजोएट 1 मि.ली./लीटर दवा 4 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। खरीफ दलहनी फसलों में इस माह में नमी की अत्यधिक कमी होने पर फूल झड़ने लगते हैं, इसलिए नमी खेत में बनाए रखें। इस समय बैंगन में कोक्सीनेल्लाबीटल का प्रकोप होता है। इसकी रोकथाम के लिए कुनोल्फोस 2.0 मि.ली./लीटर के हिसाब से छिड़काव करना चाहिए। साथ ही तना व फलछेदक के लिए कार्बोरिल 2.0 ग्राम/लीटर की दर से प्रयोग करना चाहिए। पूसासंकर 3 लौकी की बुवाई अगस्त तक की जा सकती है और इस किस्म में लौकी की तुड़ाई 50 से 55 दिनों में शुरू हो जाती है। गाजर की पूसा मेघालय और पूसा यमदागिनी किस्म की बुवाई पर इस माह में कर सकते हैं। पूसाचेत की मूली की बुवाई भी इस माह तक की जा सकती है जो 40-50 दिनों में तैयार हो जाती है। पहले बोई गयी भिन्डी की फसल में बुवाई के 30 दिन बाद प्रति हैक्टर 35-40 किलोग्राम नत्रजन (76-87 किलोग्राम यूरिया) की टॉपड्रेसिंग करें।

फूलगोभी के अगेती किस्मों जैसे पूसा शरद, पूसा संकर 2, पूसा मेघना की बुवाई के लिए नर्सरी तैयार कर सकते हैं। बंद गोभी की पूसा अगेती गोल्डन एकड़ की बुवाई इस माह में की जा सकती है। बंद गोभी की नर्सरी में डम्पिंगऑफ से बचाव के लिए बलैटोक्स का 205 मि.ली./लीटर पानी में मिलाकर करना चाहिए। टमाटर की पूसा सदाबहार, पूसा रोहिणी, पूसा 120, पूसा गौरव, पी.एच.-2 और पी.एच. 8 की रोपाई इस माह कर सकते हैं।

—राजीव कुमार सिंह

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

रासा की प्रमुख गतिविधियां एवं उपलब्धियां

तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन: रासा द्वारा बदलते वैश्विक परिदृश्य में सतत कृषि विकास पर 3 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 11-13 अक्टूबर 2019 को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस, उ.प्र. में आयोजित किया गया। प्रो. पंजाब सिंह, कुलाधिपति, रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि

विश्वविद्यालय, झांसी इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे। इस सम्मेलन में देश-विदेश से आये वैज्ञानिकों, विद्यार्थियों व किसानों ने भाग लिया। सम्मेलन के दौरान कई प्रकार के सम्मान व पुरस्कार भी प्रतिभागियों को दिया गया। यह सम्मेलन बहुत ही सफल एवं सराहनीय रहा।

तीसरा स्थापना दिवस का आयोजन: रासा ने तेरह अक्टूबर 2019 को उदय प्रताप महाविद्यालय, वाराणसी में तीसरा स्थापना दिवस मनाया। डॉ. हरेंद्र सिंह, एम.एल.ए., जफराबाद इस स्थापना दिवस के मुख्य अतिथि थे। श्री देवेन्द्र सिंह, संगठन मंत्री, श्री नरेंद्र सिंह रघुवंशी, जिला अध्यक्ष और डॉ. बिंध्याचल सिंह स्थापना दिवस के अतिथि थे। श्री अवधेश कुमार सिंह, अध्यक्ष रासा, मुख्य अतिथि और अतिथियों को रासा के बारे में विस्तार से बताया। अतिथियों द्वारा समाज को शिक्षित बनाने में लोगों द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की गयी। मुख्य अतिथि ने रासा फेलो 2019 पुरस्कार से रासा सदस्यों को सम्मानित भी किया।

रासा द्वारा प्रदर्शन व प्रदर्शन शिविर का आयोजन: रासा द्वारा चंदौली जिले के गाँव में धान की डी.आर.आर. 50 किस्म व जौनपुर जिले के गाँव में ट्रैक्टर संचालित सीडड्रिल का उपयोग करके 10 किसानों के खेतों में सरसों के उन्नत किस्म का प्रदर्शन लगाया गया। रासा द्वारा एक प्रदर्शन शिविर का वाराणसी जिले के गाँव में आयोजन किया गया। किसानों की रुचि के अनुसार, गाँव में 10 किसानों के खेत में सरसों के उन्नत किस्म का प्रदर्शन भी लगाया गया।

रासा की कोर व रासा जर्नल की आजीवन सदस्यता: देश के विभिन्न प्रदेशों से जुलाई से दिसम्बर के बीच रासा के 28 कोर सदस्य व रासा जर्नल के 14 आजीवन सदस्य बनाये गए।

रासा परिवार की प्रमुख उपलब्धियाँ

राँयल विज्ञान सेवित सामाजिक-सांस्कृतिक उन्नयन संस्था (रासा) परिवार के सदस्यों की प्रमुख उपलब्धियाँ निम्न प्रकार हैं—

- ◆ डॉ. ए. के. सिंह गन्ना शोध संस्थान, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर, बिहार में शोध निदेशक चुने गये।
- ◆ डॉ. के. के. सिंह पंडित दीनदयाल बागवानी व वानिकी विद्यालय, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर, बिहार में अधिष्ठाता चुने गये।
- ◆ डॉ. आकर्ष परिहार, प्रोफेसर, आनंद कृषि विश्वविद्यालय, आनंद, गुजरात, डॉ. आर.के. सिंह, सह-प्राध्यापक, बाँदा कृषि व प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय, बाँदा, उ. प्र., डॉ. कपिल शेखावत, सीनियर वैज्ञानिक, सस्य विज्ञान संभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, डॉ. एन. एस. रघुवंशी, सीनियर वैज्ञानिक, एन.डी.यू.ए.टी. कृषि विज्ञान केंद्र, जौनपुर, उ.प्र., व डॉ. यु.बी. सिंह, वैज्ञानिक, कृषि संबंधी महत्वपूर्ण सूक्ष्मजीवों का राष्ट्रीय ब्यूरो, मउनाथ भंजन, उ.प्र. को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में 11-13 अक्टूबर 2019 को आयोजित